आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:10/12/2022; Published:31/01/2023

खोया है

डॉ. आशा रब्ब

मूल:डॉ. कविता एस. कुसुगल (कन्नड)

खो गयी हूँ

इस मेले में...

अकेली

ढूँढ रही हूँ..

वे मेरे अपनों के

हँसमुख चेहरे...

कहींकैसे भी ,

एक कदम पीछे लेकर

आगे बढ़ने जैसा है

हंसी है और नफरत भी

रक्त संबंधों में है अब

कल्मश गंदा जल।

मन तड़प रहा है

जीव जल के लिए।

****